पंजाब केसरी 31/01/2026

विकसित भारत-2047 विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में भाग लेते शिक्षाविद् और मुख्य अतिथि को स्मृतिचिन्ह भेंट करते आयोजक। (बदमोहन)

अम्बाला, 30 जनवरी (बलराम): छावनी स्थित गांधी मैमोरियल नैशनल कॉलेज में शुक्रवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के आई.सी.एस.एस.आर. द्वारा प्रायोजित 'विकसित भारत 2047 के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक मार्गों को अनलॉक करना: समावेशी और स्थायी राष्ट्र-निर्माण के लिए रणनीतियां' विषय पर आधारित 2 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आगाज हुआ।

हाइब्रिड मोड में आयोजित इस संगोष्ठी में स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष की ओर भारत की विकास यात्रा पर विचार-विमर्श करने के लिए शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं, विद्वानों और शासन व प्रशासनिक सेवाओं के प्रतिनिधियों को एक साथ लाया गया। संगोष्ठी का आयोजन कॉलेज के अध्यक्ष डॉ. गुरदेव सिंह के मार्गदर्शन में और प्राचार्य डॉ. रोहित दत्त के संरक्षण में किया गया। उद्घाटन सत्र की शुरुआत सरस्वती वंदना और दीप प्रगवलन के साथ हुई, जिससे अकादमिक कार्यवाही की औपचारिक शुरुआत हुई। डॉ. नेहा अग्रवाल ने सेमिनार के बारे में पूर्ण विवरण दिया।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि अम्बाला छावनी के एस.डी.एम. डॉ. विनेश कुमार ने कहा कि विकसित भारत-2047 का दृष्टिकोण संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों और नीति निर्देशक तत्वों में दृढ़ता से निहित है। नीति निर्देशक तत्व एक न्यायपूर्ण, समावेशी एवं कल्याणकारी राष्ट्र के निर्माण के लिए एक संवैधानिक रोडमैप प्रदान करते हैं।

उन्होंने कहा कि स्थायी विकास तभी संभव है, जब संवैधानिक मूल्यों को शासन प्रथाओं और सक्रिय जनभागीदारी में अनुवाद किया जाए। इस तरह के अकादमिक मंच संवैधानिक आदर्शों और ग्राऊंड रियलिटी के बीच की खाई को सूचित संवाद और शोध के माध्यम से भरने में मदद करते हैं।

हरियाणा राज्य तकनीकी शिक्षा, पंचकूला के उप सचिव डॉ. हितेश कुमार ने स्थायी राष्ट्रीय विकास को प्राप्त करने में व्यक्तिगत उत्तरदायित्व और नैतिक नागरिकता के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने जोर दिया कि नीति पहल और संस्थागत ढांचे तभी सफल हो सकते हैं, जब नागरिक जिम्मेदार व्यवहार, कौशल विकास और पर्यावरण जागरूकता के माध्यम से सक्रिय रूप से योगदान दें। इसी तरह, अम्बाला छावनी नगरपरिषद के कार्यकारी अधिकारी देवेंद्र नरवाल ने विकसित भारत 2047 के लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्थानीय शासन और नागरिक भागीदारी की भूमिका पर विचार किया। उन्होंने जोर दिया कि नगर स्तर पर शहरी योजना, स्व%छता, पर्यावरणीय स्थायित्व और सामुदायिक भागीदारी समावेशी विकास की रीढ़ हैं।

मुख्य भाषण पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ के महिला अध्ययन एवं विकास विभाग के अध्यक्ष प्रो. राजेश अग्रवाल द्वारा दिया गया। उन्होंने जोर दिया कि समावेशी राष्ट्र निर्माण के लिए राज्य, अकादमिक संस्थानों और नागरिक समाज संगठनों के बीच निरंतर सहयोग आवश्यक है। विकास के केंद्र में लैंडर न्याय और सामाजिक समानता पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि एक विकसित राष्ट्र को केवल आर्थिक संकेतकों से नहीं, बल्कि हाशिए पर पड़े समुदायों के सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक और सामाजिक संस्थानों के मजबूत होने से मापा जाना चाहिए।

संगोष्ठी में सामाजिक-सांस्कृतिक मार्ग से समावेशी विकास, आर्थिक विकास, शासन एवं नीति ढांचे, तकनीकी एवं वैज्ञानिक नवाचार, पर्यावरणीय स्थायित्व, शिक्षा एवं मानव संसाधन विकास और स्वास्थ्य, कल्याण एवं सामाजिक न्याय जैसे विषयों पर तकनीकी सत्र शामिल हैं। शोध पत्र प्रस्तुतियों और अंत:विषय चर्चा के माध्यम से, प्रतिनिधियों ने विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण के अनुरूप कार्रवाई योग्य और नीति संबंधी रणनीतियों का अन्वेषण किया। संगोष्ठी के आयोजन में डॉ. सी.पी. पूनिया और डॉ. नेहा अग्रवाल की अहम भूमिका रही। उद्घाटन समारोह का समापन स्टेज सेक्रेटरी डॉ. अनुपमा सिहाग के संबोधन और राष्ट्रगान के साथ हुआ। डॉ. अमित, महक, यशवी एवं जस्मिता ने मंच संचालन में अपना सहयोग किया।

संगोष्ठी 31 जनवरी को जारी रहेगी, जिसमें विशेषज्ञ व्याख्यान, तकनीकी पत्र प्रस्तुतियां और प्रमाण पत्र वितरण के साथ एक समापन सत्र होगा, जिसका उद्देश्य 2047 तक एक विकसित और स्थायी भारत के लिए चल रहे अकादमिक संवाद और सहयोग रणनीतियों को बढ़ावा देना है।